



पश्मीना से खुबानी तक: लद्दाख की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए जीएसटी सुधार

22 अक्टूबर, 2025

मुख्य बिंदु

- 10,000+ कारीगरों की मदद के लिए पश्मीना, नमदा गलीचे और लकड़ी से बनी शिल्प कलाकृतियों पर 5 प्रतिशत जीएसटी
- जीएसटी कम होने से डेयरी और जैविक खेती में बेहतर आय और प्रतिस्पर्धात्मकता देखी जा रही है; खुबानी की खेती में लगे 6,000+ किसान परिवारों को लाभ होगा
- यात्रा को अधिक किफायती बनाने और 25,000+ लोगों की आजीविका को बनाए रखने के लिए होटल टैरिफ पर 5 प्रतिशत जीएसटी $\leq$ 7,500 रुपये निर्धारित
- लद्दाख में स्वावलंबन को बढ़ावा देने के लिए याक डेयरी, ऊन उत्पादकों और जैविक खेती को समर्थन देने के लिए जीएसटी में कटौती

परिचय

लद्दाख की अर्थव्यवस्था अपने अद्वितीय भूगोल, संस्कृति और शिल्प कौशल में गहराई से निहित है। यहां पारंपरिक आजीविका उभरते पर्यावरण के अनुकूल उद्योगों के साथ जुड़ी हुई है। उच्च गुणवत्ता वाले पश्मीना ऊन और खुबानी के बागों से लेकर जटिल थांगका पेंटिंग और टिकाऊ पर्यटन तक, प्रत्येक क्षेत्र क्षेत्र के कौशल और विरासत को दर्शाता है।

उत्पादों और सेवाओं की विस्तृत विविधता की श्रेणी में हाल ही में जीएसटी में कटौती से लद्दाख की समृद्ध अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ेगा और इससे कारीगरों, किसानों और छोटे उद्यमों को राहत मिलेगी। साथ ही ये सुधार आजीविका सृजन, सांस्कृतिक संरक्षण और लद्दाख की अर्थव्यवस्था के सतत विकास का समर्थन करेंगे।



हथकरघा

पश्मीना ऊन और उत्पाद

लद्दाख के सबसे मूल्यवान पारंपरिक शिल्पों में से एक, **पश्मीना ऊन का उत्पादन लेह के चांगथांग क्षेत्र** में किया जाता है। इससे **10,000 से अधिक खानाबदोश चरवाहों** का जीवन यापन होता है। पश्मीना अपनी गर्मी, कोमलता और सुंदरता के लिए जानी जाती है, और इसका उपयोग प्रीमियम शॉल, स्टोल और अन्य वस्त्रों के लिए किया जाता है।

जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से आयातित या मशीन से बने विकल्पों की तुलना में प्रामाणिक लद्दाखी पश्मीना की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। इससे **स्थानीय चरवाहों और कारीगरों के लिए** आय स्थिरता में सुधार करने और **निर्यात वृद्धि की संभावना बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।**

हाथ से बुने हुए ऊनी और नमदा गलीचे

लेह और कारगिल के हाथ से बुने हुए ऊनी और नमदा गलीचे लद्दाख की ऊन शिल्प कौशल की समृद्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। याक और भेड़ की ऊन का उपयोग रंगे और विशिष्ट वस्त्र बनाने के लिए किया जाता है। **जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से उत्पादन लागत कम करने में मदद मिलती है और पारंपरिक हस्तशिल्प तौर-तरीकों में सुधार को प्रोत्साहित किया जाता है।** इससे ऊन प्रसंस्करण और गलीचा बनाने में लगे स्थानीय कारीगरों और सहकारी समितियों को महत्वपूर्ण लाभ मिलने की उम्मीद है।

ऊनी फेल्ट उत्पाद और ऊनी सहायक उपकरण

लेह और चांगथांग के ऊन महसूस किए गए उत्पाद और ऊनी सामान, जैसे कि फेल्ट जूते, टोपी और दस्ताने, लद्दाख की पारंपरिक शिल्प संस्कृति को बढ़ाते हैं। इन वस्तुओं का उपयोग स्थानीय रूप से किया जाता है और और ये पर्यटकों के बीच भी खरीददारी के लिए लोकप्रिय हैं। **जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से ऊन प्रसंस्करण और उत्पाद निर्माण में लगे छोटे पैमाने पर, मौसमी कुटीर उद्योगों को सहायता**

मिलती है । इससे कारीगरों की आय में वृद्धि के साथ लद्दाख की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की भी उम्मीद है।

हस्तशिल्प

पारंपरिक लद्दाखी बढईगीरी

लेह और कारगिल की पारंपरिक लद्दाखी बढईगीरी में जटिल नक्काशीदार लकड़ी की वेदी, खिड़की के फ्रेम और फर्नीचर हैं। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से इन दस्तकारी वस्तुओं को अधिक किफायती और बाजार-प्रतिस्पर्धी बनाने की उम्मीद है। इससे कई हाशिए पर रहने वाले समुदायों सहित पारंपरिक शिल्पकारों को सहयोग तो मिलेगा ही साथ ही लद्दाख की सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत के संरक्षण को प्रोत्साहित भी मिलेगा।

लद्दाखी थांगका पेंटिंग

पारंपरिक बौद्ध स्क्रॉल कला लद्दाखी थांगका पेंटिंग, अक्सर लेह, अलची और हेमिस के मठों में तैयार की जाती हैं। इनका उपयोग ध्यान और सजावट के लिए किया जाता है। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से इन जटिल चित्रों को अधिक सुलभ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाया जा सकता है, इससे लद्दाख की सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण हिस्से को संरक्षित करने में मदद मिलती है।



स्थानीय पर्यटन और होमस्टे

लेह, नुब्रा, पैगोंग और कारगिल में स्थानीय पर्यटन और होमस्टे लद्दाख की सेवा अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हैं, इससे सीधे तौर पर 25,000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलता है। खासकर व्यस्त पर्यटन सीजन के दौरान, प्रति रात 7,500 रुपये तक के होटल टैरिफ पर जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत

करने से यात्रा और आवास अधिक किफायती हो जाता है। यह इको-टूरिज्म और स्थानीय होमस्टे अर्थव्यवस्था के विकास में सहायता करेगा।

डेयरी और कृषि उत्पाद

खुबानी और खुबानी उत्पाद

लद्दाख देश का सबसे बड़ा खुबानी-उत्पादक है, इसमें कारगिल, लेह और नुब्रा घाटी इसके मुख्य उत्पादन केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। जीएसटी में 12 प्रतिशत से पांच प्रतिशत की कटौती से खुबानी की खेती और प्रसंस्करण में लगे 6,000 किसान परिवारों को लाभ होता है। इससे स्थानीय रूप से उत्पादित खुबानी और उनके मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे सूखे खुबानी, जैम और तेल की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होने की उम्मीद है, इससे वे अधिक बाजार-अनुकूल बन जाएंगे। इससे बेहतर आय के अवसर पैदा होंगे और खुबानी उत्पादन में लगे उद्यमों में विकास को प्रोत्साहन मिलेगा।

डालेचुक (सी बकथॉर्न) उत्पाद

लद्दाख के नुब्रा घाटी, लेह और चांगथांग क्षेत्रों में उगाई जाने वाली सी बकथॉर्न अपने औषधीय और पोषण सम्बंधी गुणों के लिए प्रसिद्ध है। महिलाओं द्वारा चलाये जाने वाले स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) इन जामुनों की कटाई और प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से स्थानीय रूप से निर्मित सी बकथॉर्न उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ने की उम्मीद है, जिससे वे अधिक किफायती और बाजार-अनुकूल बन जाएंगे।

याक पनीर और दूध उत्पाद

चांगथांग और नुब्रा के याक पनीर और दूध उत्पाद लद्दाख के खानाबदोश समुदायों द्वारा उत्पादित पारंपरिक डेयरी उत्पाद हैं। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत करने से दूरस्थ, ऊंचाई वाले क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता का समर्थन मिलेगा। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

लेह बेरी (बकथॉर्न बेरी)

लेह बेरी, या बकथॉर्न बेरी, लेह और नुब्रा से स्वास्थ्य पेय और पूरक की एक श्रृंखला के उत्पादन में उपयोग किया जाता है। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से स्थानीय कृषि-प्रसंस्करण में निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा, छोटे उत्पादकों का उत्थान होगा और प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

जैविक खेती उत्पाद

शाम घाटी और कारगिल में, जैविक खेती गति पकड़ रही है, किसान हर्बल चाय, सूखी सब्जियां आदि का उत्पादन कर रहे हैं। जीएसटी को 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने से लागत कम करके और लाभप्रदता में सुधार करके छोटे पैमाने के जैविक खेती करने वाले किसानों का समर्थन करता है। इससे लद्दाख की जैविक कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हुए टिकाऊ कृषि पद्धतियों को व्यापक रूप से अपनाने को प्रोत्साहित करने की उम्मीद है।



निष्कर्ष

हाल ही में किए गए जीएसटी सुधार लद्दाख के पारंपरिक कारीगरों और किसानों को सशक्त बनाकर उसकी अर्थव्यवस्था के लिए एक परिवर्तनकारी कदम हैं। पशुमाला बुनकरों और खुबानी उत्पादकों से लेकर **डालेचुक (सी बकथॉर्न)** की पैदावार करने वाले और होमस्टे मालिकों तक, प्रत्येक क्षेत्र को कम लागत, बेहतर प्रतिस्पर्धात्मकता और उच्च आय के माध्यम से लाभ प्राप्त करना है।

ये सुधार लद्दाख की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करेंगे, पर्यावरण अनुकूल उद्योगों को मजबूत करेंगे और स्थानीय उत्पादों को अधिक किफायती और विपणन योग्य बनाएंगे।

पीके/केसी/वीके/एमपी